

## दक्षिणी छोटानागपुर की जनजातीय सांस्कृतिक विरासत और सांस्कृतिक पर्यटन का विकास : एक भौगोलिक विवेचना

सुमित कुमार

शोधकर्ता

भूगोल विभाग, राँची विश्वविद्यालय, राँची

### सारांश

प्रस्तुत शोध आलेख झारखण्ड राज्य के दक्षिणी छोटानागपुर प्रमंडल में जनजातीय सांस्कृतिक विरासत और सांस्कृतिक पर्यटन के मध्य भौगोलिक सम्बन्धों की विवेचना करता है। इस प्रमंडल में राँची, गुमला, सिमडेगा, लोहरदगा और खूंटी — पाँच जिले सम्मिलित हैं, जो मुण्डा, उराँव, हो और बिरहोर जनजातियों की सघन बसाहट के केन्द्र हैं। अध्ययन दो प्रमुख उद्देश्यों पर आधारित है — (1) प्रमंडल की जनजातीय सांस्कृतिक विरासत के भौगोलिक वितरण का विश्लेषण करना, तथा (2) सांस्कृतिक पर्यटन के विकास में आने वाली बाधाओं और संभावनाओं का अन्वेषण करना। द्वितीयक आँकड़ों, क्षेत्र-साहित्य और प्रकाशित शोधों के आधार पर यह निष्कर्ष सामने आया कि यद्यपि इस क्षेत्र में पर्यटन की असाधारण संभावनाएँ हैं, तथापि अवसंरचना की कमी, सांस्कृतिक व्यावसायीकरण का खतरा और नीति-कार्यान्वयन की शिथिलता प्रमुख चुनौतियाँ हैं। अध्ययन सतत एवं समुदाय-आधारित सांस्कृतिक पर्यटन की वकालत करता है।

**मुख्य शब्द :** जनजातीय सांस्कृतिक विरासत, सांस्कृतिक पर्यटन, दक्षिणी छोटानागपुर, पर्यटन भूगोल, मुण्डा, उराँव, झारखण्ड।

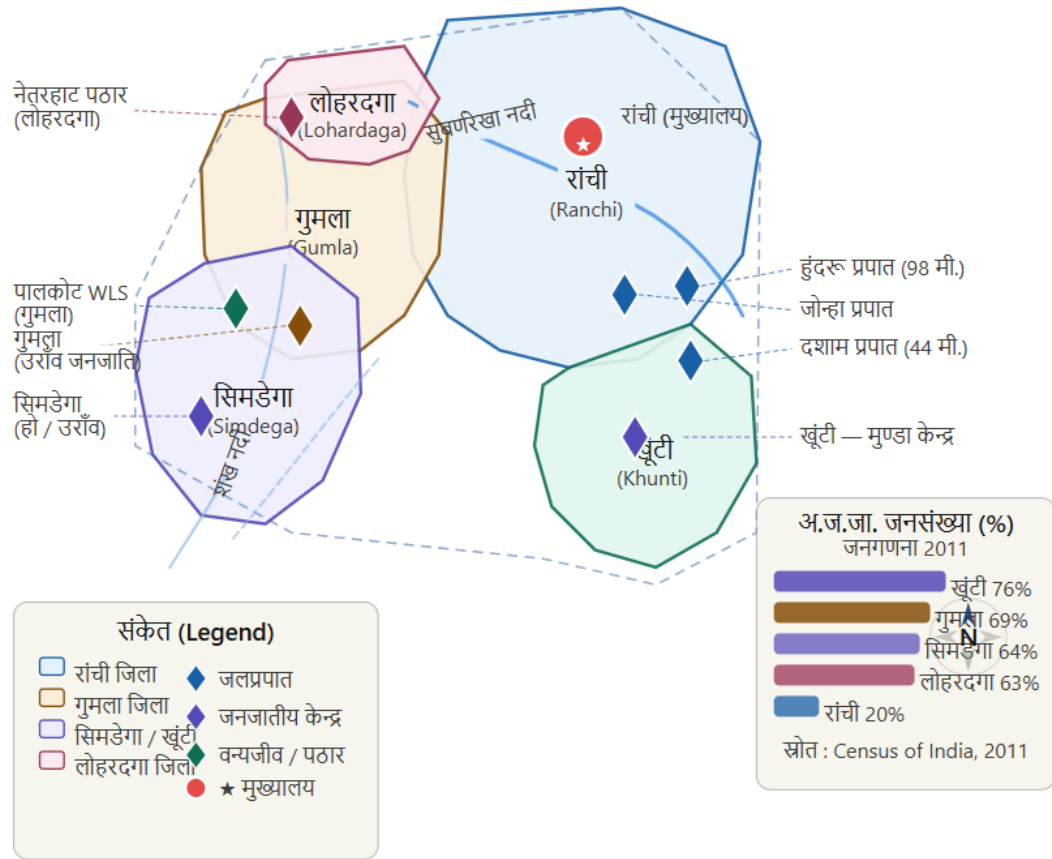
### 1. प्रस्तावना

दक्षिणी छोटानागपुर प्रमंडल भारत के उन विशिष्ट भू-सांस्कृतिक क्षेत्रों में से एक है जहाँ प्रकृति, इतिहास और जनजातीय परम्पराएँ एक अनूठे ताने-बाने में बुनी हुई हैं। कुमार एवं बाराईक (2024) के अनुसार छोटानागपुर पठार पर निवास करने वाला मुण्डा समुदाय अपनी कृषि-विशेषज्ञता और समृद्ध लोक-परम्पराओं के लिए विख्यात है। झारखण्ड राज्य में 30 से अधिक अनुसूचित जनजातियाँ निवास करती हैं जिनमें संताल, मुण्डा, उराँव और हो प्रमुख हैं (मिज़, 2022); और इनका सांस्कृतिक जीवन पर्यटन के दृष्टिकोण से अत्यन्त समृद्ध है।

सांस्कृतिक पर्यटन की अवधारणा के अन्तर्गत पर्यटक किसी स्थान की जीवन-शैली, उत्सवों, हस्तशिल्प, संगीत एवं नृत्य परम्पराओं का अनुभव प्राप्त करने के उद्देश्य से यात्रा करते हैं। रवि कुमार एवं चतुर्वेदी (2024) के शोध में स्पष्ट किया गया है कि झारखण्ड की जनजातीय संस्कृति पर्यटकों को सहभागिता, सांस्कृतिक विनिमय और सततता — तीनों अवसर प्रदान करती है। तथापि इस संभावना का समुचित दोहन अभी तक नहीं हो सका है।

दक्षिणी छोटानागपुर प्रमंडल, जिसका मुख्यालय राँची में है, 18,235 वर्ग किमी. क्षेत्रफल में विस्तृत है और इसकी कुल जनसंख्या 55.32 लाख (जनगणना, 2011) है। इस प्रमंडल में जनजातीय जनसंख्या का अनुपात कुछ जिलों में 76 प्रतिशत तक है जो इसे एक विशिष्ट सांस्कृतिक पर्यटन क्षेत्र बनाता है।

## 2. अध्ययन क्षेत्र



मानचित्र 1 : दक्षिणी छोटानागपुर प्रमंडल — जिले एवं प्रमुख सांस्कृतिक स्थल

प्रस्तुत अध्ययन के लिए झारखण्ड राज्य के दक्षिणी छोटानागपुर प्रमंडल को चुना गया है जो उत्तर में उत्तर छोटानागपुर, पश्चिम में ओड़िशा और दक्षिण में छत्तीसगढ़ से घिरा है। विकिपीडिया (2024) के अनुसार इस प्रमंडल में रांची, गुमला, खूंटी, लोहरदगा और सिमडेगा — पाँच जिले सम्मिलित हैं।

तालिका 1 : दक्षिणी छोटानागपुर प्रमंडल — जिलेवार जनजातीय जनसंख्या (2011)

जिला	कुल जनसंख्या (2011)	जनजातीय जनसंख्या	अ.ज.जा. प्रतिशत	प्रमुख जनजाति
रांची	29,14,253	5,92,711	20.3%	मुण्डा, उराँव
गुमला	10,25,656	7,08,023	69.1%	उराँव, मुण्डा
सिमडेगा	5,99,578	3,85,255	64.3%	उराँव, हो
लोहरदगा	4,61,790	2,88,956	62.6%	उराँव, बिरहोर
खूंटी	5,31,885	4,06,019	76.3%	मुण्डा

स्रोत : भारतीय जनगणना, 2011 (भारत के महापंजीयक एवं जनगणना आयुक्त का कार्यालय)

## 3. शोध उद्देश्य

प्रस्तुत शोध आलेख के दो प्रमुख उद्देश्य निर्धारित किए गए हैं :

- उद्देश्य 1 : दक्षिणी छोटानागपुर प्रमंडल की जनजातीय सांस्कृतिक विरासत के भौगोलिक वितरण का विश्लेषण करना तथा विभिन्न जिलों में सांस्कृतिक पर्यटन संसाधनों की पहचान करना।
- उद्देश्य 2 : प्रमंडल में सांस्कृतिक पर्यटन के विकास में बाधाओं एवं संभावनाओं का अन्वेषण करना तथा सतत सांस्कृतिक पर्यटन हेतु नीतिगत सुझाव प्रस्तुत करना।

#### 4. शोध पद्धति

प्रस्तुत शोध में द्वितीयक आँकड़ों पर आधारित गुणात्मक-विश्लेषणात्मक पद्धति अपनायी गई है। जनगणना 2011 के आँकड़े, झारखण्ड पर्यटन विकास निगम के प्रतिवेदन, यू.जी.सी.-केयर एवं अन्य प्रतिष्ठित शोध-पत्रिकाओं में प्रकाशित शोधपत्र तथा सरकारी दस्तावेज प्रमुख स्रोत रहे हैं। भौगोलिक विश्लेषण हेतु विषयगत मानचित्रण (*थीमैटिक मैपिंग*) और विवरणात्मक सांख्यिकी का उपयोग किया गया है।

#### 5. जनजातीय सांस्कृतिक विरासत : भौगोलिक वितरण

##### 5.1 पर्व-त्योहार एवं लोकोत्सव

दक्षिणी छोटानागपुर प्रमंडल के पाँचों जिलों में जनजातीय उत्सव कृषि, प्रकृति और आध्यात्म के संगम हैं। **सरहुल** इस क्षेत्र का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण उत्सव है जो चैत्र मास की तृतीया को मनाया जाता है। **देशाभिमानी (2025)** के अनुसार रांची, गुमला, खूंटी, सिमडेगा और लोहरदगा में सरहुल का उत्सव अत्यन्त भव्य रूप से मनाया जाता है और इसमें उराँव, मुण्डा एवं हो जनजातियाँ साल वृक्ष की उपासना करती हैं।

सरहुल का अर्थ है साल वृक्ष की पूजा। रांची में सरहुल जुलूस 1961 में प्रारम्भ हुआ था जो आज एक विशाल सांस्कृतिक आयोजन बन चुका है (**इण्डियन कम्युनिटी, 2026**)। यह उत्सव न केवल जनजातीय अस्मिता का प्रतीक है बल्कि पर्यटकों के लिए एक अनूठा अनुभव भी प्रदान करता है।

इसी प्रकार **करमा उत्सव** उराँव और मुण्डा समुदायों का एक प्रमुख उत्सव है। **आई.जे.एच.एस.एस.एम. (2023)** के अनुसार करमा उत्सव में कर्मइतिन महिलाएँ देवता को अर्पण करती हैं और नागडा, गायन एवं नृत्य के साथ हड़िया सामुदायिक भोज का आयोजन होता है। यह उत्सव पर्यटकों को जनजातीय जीवन से सीधे जुड़ने का अवसर देता है।

सोहराई और बाँदना पर्व — पशुधन की पूजा से सम्बन्धित — भाद्रपद में मनाये जाते हैं। **मिंज़ (2022)** ने विस्तार से दर्शाया है कि संताल, मुण्डा और उराँव तीनों जनजातियाँ मण्डार, नगाड़ा और करताल जैसे पारम्परिक वाद्ययंत्रों के साथ इन उत्सवों में प्रकृति-पूजा की परम्परा जीवित रखती हैं।

##### 5.2 पारम्परिक नृत्य एवं संगीत

जनजातीय नृत्य और संगीत इस प्रमंडल की सांस्कृतिक पहचान के अभिन्न अंग हैं। **करमा नृत्य** और **सरहुल नृत्य** उराँव और मुण्डा जनजातियों की पहचान हैं जिनमें स्त्री-पुरुष दोनों भाग लेते हैं (**आई.जे.सी.आर.टी., 2022**)। इन नृत्यों में सामुदायिक जीवन की उल्लास और प्रकृति के प्रति कृतज्ञता प्रकट होती है।

छऊ नृत्य — जो सिमडेगा और रांची क्षेत्र में लोकप्रिय है — भारत सरकार द्वारा यूनेस्को की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत सूची में अनुशंसित है। **रवि कुमार एवं चतुर्वेदी (2024)** ने लिखा है कि इन नृत्य-प्रदर्शनों में भाग लेकर पर्यटक जनजातीय ताल, प्रतीकवाद और सांस्कृतिक लय को गहराई से समझ सकते हैं।

##### 5.3 हस्तशिल्प एवं लोककला

इस प्रमंडल की जनजातीय हस्तशिल्प परम्परा अत्यन्त समृद्ध है। **हो जनजाति** अपनी जटिल मनका-कारीगरी के लिए प्रसिद्ध है (**नोमैडिक नेटिव ट्राइब्स, 2024**) जबकि उराँव जनजाति काठ-नक्काशी और मिट्टी-कला में दक्ष है। बाँस-शिल्प, रंगोली और सोहराई-चित्रकला (भित्ति-कला) पर्यटकों में विशेष रुचि जगाती हैं।

##### 5.4 पवित्र वन (सरना स्थल) एवं धार्मिक पर्यटन

दक्षिणी छोटानागपुर के प्रत्येक गाँव में एक **सरना स्थल** अर्थात् पवित्र वन होता है जहाँ ग्राम देवता का निवास माना जाता है। **आई.ए.एस. ज्ञान (2025)** के अनुसार इन पवित्र वनों में ही सरहुल, करमा और अन्य उत्सवों की मुख्य धार्मिक क्रियाएँ सम्पन्न होती हैं। ये स्थल पर्यावरण संरक्षण की जनजातीय दृष्टि और आध्यात्मिकता का अनूठा संगम हैं।

#### 6. सांस्कृतिक पर्यटन का विकास : संभावनाएँ और बाधाएँ

##### 6.1 वर्तमान पर्यटन स्थिति

झारखण्ड पर्यटन विकास निगम के अन्तर्गत इस प्रमंडल में जोन्हा जलप्रपात, हुंदरू जलप्रपात, दशाम जलप्रपात, नेतरहाट पठार और पालकोट वन्यजीव अभयारण्य प्रमुख पर्यटन स्थल हैं। 2014 में झारखण्ड में 33.60 लाख घरेलू और 1,54,731 विदेशी पर्यटक आये थे (**विकिपीडिया, झारखण्ड में पर्यटन**)। किन्तु इनमें से अधिकांश पर्यटन प्राकृतिक स्थलों तक सीमित रहा; सांस्कृतिक पर्यटन की भागीदारी अत्यन्त सीमित रही।

##### 6.2 सांस्कृतिक पर्यटन की संभावनाएँ

इस प्रमंडल में सांस्कृतिक पर्यटन की संभावनाएँ बहुआयामी हैं :

- उत्सव-पर्यटन : सरहुल, करमा, सोहराई जैसे पर्वों के दौरान आयोजित महोत्सव पर्यटकों को आकर्षित कर सकते हैं।
- हस्तशिल्प पर्यटन : रांची एवं गुमला के हस्तशिल्प ग्रामों को पर्यटन मानचित्र पर लाने की पर्याप्त संभावना है।

- जनजातीय गृह-प्रवास पर्यटन : जनजातीय आवास-पर्यटन के माध्यम से पर्यटक स्थानीय जीवन-शैली का अनुभव कर सकते हैं।
- धार्मिक-सांस्कृतिक परिपथ : सरना स्थलों, देवगृहों और लोकोत्सव स्थलों को जोड़ते हुए एक "जनजातीय सांस्कृतिक परिपथ" विकसित किया जा सकता है।
- डिजिटल विरासत दस्तावेज़ीकरण : भौगोलिक सूचना प्रणाली और मोबाइल अनुप्रयोग के माध्यम से जनजातीय गीत, नृत्य, हस्तशिल्प और पवित्र स्थलों का डिजिटल दस्तावेज़ीकरण किया जाए।

**रवि कुमार एवं चतुर्वेदी (2024)** ने स्पष्ट रूप से उल्लेख किया है कि जनजातीय पर्यटन पर्यटकों को हस्तशिल्प, सांस्कृतिक प्रदर्शनों और मार्गदर्शित भ्रमणों के माध्यम से आर्थिक अवसर उपलब्ध कराता है, किन्तु इसके लिए समुदाय की स्वामित्व-भावना आवश्यक है।

### 6.3 प्रमुख बाधाएँ

जहाँ एक ओर संभावनाएँ विपुल हैं, वहीं दूसरी ओर निम्नलिखित बाधाएँ पर्यटन विकास को अवरुद्ध कर रही हैं :

**(क) अवसंरचना की कमी :** सिमडेगा और लोहरदगा जैसे जिलों में सड़क-सम्पर्क, आवास और संचार-सुविधाओं का अभाव पर्यटकों की पहुँच को सीमित करता है। **कुमार (2022)** के अनुसार इस क्षेत्र में सामाजिक-आर्थिक विषमताएँ पर्यटन अवसंरचना के विकास में बाधक हैं।

**(ख) सांस्कृतिक व्यावसायीकरण का खतरा :** पर्यटन की वृद्धि के साथ जनजातीय सांस्कृतिक अभिव्यक्तियों को पर्यटकों की अपेक्षाओं के अनुसार परिवर्तित करने की प्रवृत्ति सांस्कृतिक प्रामाणिकता को नुकसान पहुँचा सकती है (**रवि कुमार एवं चतुर्वेदी, 2024**)।

**(ग) नीति-कार्यान्वयन की शिथिलता :** झारखण्ड सरकार की जनजातीय पर्यटन नीतियाँ कागजों पर उत्कृष्ट हैं, किन्तु ज़मीनी स्तर पर उनका क्रियान्वयन अपर्याप्त है (**यू.एन.डी.पी., 2021**)।

**(घ) युवा पीढ़ी का पलायन :** जनजातीय युवाओं का शहरों की ओर पलायन पारम्परिक सांस्कृतिक ज्ञान और कला-रूपों को धीरे-धीरे नष्ट कर रहा है (**महतो एवं सोरेन, 2020**)।

### 7. विवेचना एवं विश्लेषण

उपर्युक्त विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि दक्षिणी छोटानागपुर प्रमंडल में जनजातीय सांस्कृतिक संसाधनों का भौगोलिक वितरण असमान है। जनजातीय सघनता (76.3%) की दृष्टि से खूँटी जिला सर्वोच्च है, जबकि सांस्कृतिक पर्यटन अवसंरचना की दृष्टि से रांची सर्वाधिक विकसित है। यह विरोधाभास नीति-निर्माताओं के समक्ष एक महत्वपूर्ण चुनौती प्रस्तुत करता है।

सांस्कृतिक पर्यटन के विकास के लिए यह आवश्यक है कि जनजातीय समुदाय केवल "प्रदर्शनी-वस्तु" न बनें, बल्कि वे पर्यटन उद्योग के सक्रिय भागीदार हों। **रवि कुमार एवं चतुर्वेदी (2024)** इस दृष्टिकोण को "सामुदायिक स्वामित्व मॉडल" के रूप में प्रस्तुत करते हैं जिसमें स्थानीय लोग मार्गदर्शक, शिल्पकार और उद्यमी के रूप में भाग लेते हैं।

यह भी ध्यान देने योग्य है कि जनजातीय सांस्कृतिक विरासत का संरक्षण केवल पर्यटन की दृष्टि से नहीं, बल्कि सामाजिक न्याय और सांस्कृतिक अस्मिता की दृष्टि से भी अनिवार्य है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में स्थानीय ज्ञान-परम्पराओं और जनजातीय भाषाओं को मान्यता देने की जो बात कही गई है, वह इस संदर्भ में विशेष रूप से प्रासंगिक है।

### 8. नीतिगत सुझाव

दक्षिणी छोटानागपुर प्रमंडल में सतत सांस्कृतिक पर्यटन के विकास हेतु निम्नलिखित सुझाव प्रस्तुत हैं :

1. जनजातीय सांस्कृतिक परिपथ का विकास : रांची-गुमला-खूँटी-लोहरदगा-सिमडेगा को जोड़ते हुए एक "जनजातीय सांस्कृतिक पर्यटन परिपथ" बनाया जाए।
2. सामुदायिक पर्यटन प्रशिक्षण : जनजातीय युवाओं को पर्यटन प्रबन्धन, मार्गदर्शन और हस्तशिल्प-विपणन में प्रशिक्षित किया जाए।
3. डिजिटल विरासत दस्तावेज़ीकरण : भौगोलिक सूचना प्रणाली और मोबाइल अनुप्रयोग के माध्यम से जनजातीय गीत, नृत्य और पवित्र स्थलों का डिजिटल अभिलेखीकरण किया जाए।
4. सांस्कृतिक प्रामाणिकता नीति : पर्यटन के व्यावसायीकरण से जनजातीय परम्पराओं की प्रामाणिकता सुरक्षित रखने के लिए एक "सांस्कृतिक नैतिकता नीति" बनाई जाए।
5. झारखण्ड पर्यटन नीति का सुदृढीकरण : झारखण्ड पर्यटन विकास निगम को अधिक संसाधन और अधिकार देकर जिला स्तर पर पर्यटन अवसंरचना विकसित की जाए।

## 9. निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध से यह स्पष्ट हुआ है कि दक्षिणी छोटानागपुर प्रमंडल में जनजातीय सांस्कृतिक विरासत पर्यटन भूगोल की दृष्टि से एक बहुमूल्य संसाधन है। सरहुल, करमा जैसे उत्सव, मुण्डारी-कुडुख जैसी भाषाएँ, सरना स्थल और जनजातीय हस्तशिल्प — ये सब मिलकर एक ऐसी सांस्कृतिक पूँजी निर्मित करते हैं जो सतत पर्यटन की नींव बन सकती है।

किन्तु इस संभावना को साकार करने के लिए आवश्यक है कि नीति-निर्माता, शोधकर्ता और जनजातीय समुदाय मिलकर एक **भागीदारी-आधारित सांस्कृतिक पर्यटन मॉडल** विकसित करें जो आर्थिक समृद्धि और सांस्कृतिक संरक्षण — दोनों को एकसाथ साधे। **रवि कुमार एवं चतुर्वेदी (2024)** के शब्दों में विरासत-पर्यटन न केवल आर्थिक लाभ का साधन है अपितु सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण का भी एक सशक्त माध्यम है — यह विचार इस प्रमंडल पर पूरी तरह लागू होता है।

भविष्य के शोध में इस प्रमंडल के पर्यटकों के व्यवहार और सन्तुष्टि का संरचनात्मक समीकरण मॉडलिंग (*संरसमो*) आधारित मात्रात्मक अध्ययन एवं प्रत्येक जिले में पृथक क्षेत्र-सर्वेक्षण की आवश्यकता है।

## सन्दर्भ सूची

1. भारतीय जनगणना. (2011). *अनुसूचित जनजाति— प्राथमिक जनगणना सार*. भारत के महापंजीयक एवं जनगणना आयुक्त का कार्यालय।
2. देशाभिमानी. (2025, मार्च). *सरहुल : झारखण्ड का प्रकृति, परम्परा और समुदाय का महोत्सव*. देशाभिमानी इंग्लिश. <https://www.deshabhimani.com/sarhul-celebration>
3. आई.ए.एस. ज्ञान. (2025). *सरहुल पर्व : आदिवासी संस्कृति, सरना आस्था, जनजातीय पहचान*. <https://www.iasgyan.in/daily-current-affairs/sarhul-festival>
4. इण्डियन कम्युनिटी. (2026, फरवरी). *सरहुल : झारखण्ड के फूलों के पर्व की तिथि, महत्त्व और अनुष्ठान*. <https://indian.community/sarhul-festival/>
5. आई.जे.सी.आर.टी. (2022). *झारखण्ड की जनजातियाँ : उराँव और संताल जनजातियों की संस्कृति, त्योहार, भोजन एवं औषधीय पौधे*. इण्टरनेशनल जर्नल ऑफ क्रिएटिव रिसर्च थॉट्स, 10(1), 838–852. <https://ijert.org/papers/IJCRT2201107.pdf>
6. आई.जे.एच.एस.एस.एम. (2023). *पर्व और उसकी प्रतीकात्मक व्याख्या : रांची जिले के उराँव समुदाय के करमा पर्व का मानवशास्त्रीय अध्ययन*. इण्टरनेशनल जर्नल ऑफ ह्यूमेनिटीज एण्ड सोशल साइंस मैनेजमेण्ट. <https://ijhssm.org>
7. कुमार, मनु. (2022). *झारखण्ड में जाति व्यवस्था*. इण्टरनेशनल जर्नल ऑफ एन्हांस्ड रिसर्च इन एजुकेशनल डेवलपमेण्ट, 10(6), 390–393. <https://erpublications.com>
8. कुमार, आर., एवं बाराईक, वी. (2024). *मुण्डा समुदाय की सांस्कृतिक पहचान और भाषाई अभ्यास*. रवि कुमार एवं चतुर्वेदी (2024) में उद्धृत।
9. महतो, डी., एवं सोरेन, टी. (2020). *झारखण्ड में जनजातीय समुदायों के बीच सतत आजीविका रणनीतियाँ: एक केस अध्ययन*. जर्नल ऑफ सस्टेनेबल डेवलपमेण्ट, 8(3), 112–128।
10. मिंज़, एन. एन. (2022). *झारखण्ड की जनजातियाँ : उराँव और संताल जनजातियों की संस्कृति, त्योहार, भोजन एवं औषधीय पौधे*. आई.जे.सी.आर.टी., 10(1), 838–852. <https://ijert.org/papers/IJCRT2201107.pdf>
11. नोमैडिक नेटिव ट्राइब्स. (2024, अप्रैल). *झारखण्ड की विविध जनजातियों की खोज : समृद्ध सांस्कृतिक विरासत की एक यात्रा*. <http://nomadic.nativetribe.blog>
12. राज, नितेश, एवं शोध अध्वेता, रांची विश्वविद्यालय. (2023). *झारखण्ड में जनजातीय विकास हेतु सतत एवं समावेशी रणनीतियाँ*. एस.आर.एफ. रिसर्च जर्नल, 9(7), यू.जी.सी. क्रम सं. 5351. आई.एस.एस.एन. : 2454-4655।
13. रवि कुमार, एवं चतुर्वेदी, म. (2024). *झारखण्ड में आदिवासी पर्यटन : सांस्कृतिक, आर्थिक और सतत विकास परिप्रेक्ष्य— एक समीक्षा*. इण्टरनेशनल जर्नल ऑफ साइंटिफिक रिसर्च इन साइंस, इंजीनियरिंग एण्ड टेक्नोलॉजी (आई.जे.एस.आर.एस.ई.टी.), 11(7), 1283–1305. आई.एस.एस.एन. : 2395-1990. <https://ijsrset.com/IJSRSET24118037>
14. दक्षिणी छोटानागपुर प्रमंडल. (2024). *विकिपीडिया*. [https://en.wikipedia.org/wiki/South\\_Chotanagpur\\_division](https://en.wikipedia.org/wiki/South_Chotanagpur_division)
15. यू.एन.डी.पी. (2021). *झारखण्ड पर ध्यान केन्द्रित करते हुए जनजातीय समुदायों के लिए सतत एवं समावेशी विकास रणनीतियाँ*. संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम।
16. विकिपीडिया. (2024). *झारखण्ड में पर्यटन*. [https://en.wikipedia.org/wiki/Tourism\\_in\\_Jharkhand](https://en.wikipedia.org/wiki/Tourism_in_Jharkhand)